सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 171

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 37
जनवरी – 2019

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

गुरूबंधु भगिनियों से,

पिछले अंक से आगे –

इसी तरह कारणदीक्षा के बारे में है। मैं आपको हाइड्रोजन बम के उदाहरण द्वारा कारणदीक्षा के बारे में बताना चाहता हूँ। हाइड्रोजन बम बनाते समय फ्यूजन (संलयन) करते है, उसमें न्युक्लिअस के साथ अंदर एक और तत्व जोड़ दिया जाता है और उससे बहुत अधिक ऊर्जा निर्माण होती है। हमारा सूक्ष्म देह यानी बुद्धि, मन, चित्त, अहंकार यह हमारा न्युक्लिअस है और हमारा बाह्य शरीर केवल हमारी पहचान के लिए होता है। आप लोग यह सवाल पूछते है कि हमारा बाह्य शरीर 'न्युक्लिअस' क्यों नहीं है? क्योंकि वह तो यही मिट्टी में मिलने वाला है। एटम यानी अणु को हम आँखों से देख नहीं सकते लेकिन उसका अस्तित्व प्रयोगशाला में प्रमाणित किया गया है तथा उससे संबंधित प्रयोगों द्वारा कई चीजें निर्माण करने में सफलता प्राप्त हुई है। ठीक इसी तरह वं. दादाजी की कार्यपद्धती है। वं. दादाजी जैसा बड़ा वैज्ञानिक कोई नहीं है, वे हमें अभी थ्योरी बताते हैं और उस थ्योरी के अनुसार का प्रॅक्टिकल सुबह करा देते है। संसार में लाखों वैज्ञानिक है परन्तु उनके जैसा निपुण, निष्णात वैज्ञानिक अन्य कोई नहीं है जो शाम को थ्योरी बताता है और सुबह उस थ्योरी के अनुसार प्रॅक्टिकल कराता है। असल में किसी छोटी–सी चीज के आविष्कार में सारी जिंदगी निकल जाती है। कोई एक वैज्ञानिक दिन–रात परिश्रम करके एक थ्योरी बनाता है जिस पर कोई दूसरा वैज्ञानिक प्रॅक्टिकल करता है परन्तु वं. दादाजी द्वारा हमें कारणदीक्षा दी गई और हम इसी जन्म में इस दीक्षा को ग्रहण करने के लिए पात्र हो गए है तथा उसके पहले हमारे वलयों का परिक्रमा पथ भी तय हो चुका है।

अणु संबंधित फ्यूजन में सभी 92 तत्वों की आवश्यकता नहीं होती। एटम बम्ब बनाने के लिए वैज्ञानिकों ने अणु के सभी 92 तत्वों का इस्तेमाल नहीं किया। केवल 2 या 4 विशेष प्रकार के तत्व ही ऊर्जा के निर्माण के लिए उपयुक्त होते है। न्युक्लिअस में किसी खास पद्धति से कोई अतिरिक्त तत्व भी डाला जा सकता है। एटम बम्ब बनाते समय न्युक्लिअस पर काम करने के लिए विशाल रिएक्टर्स की आवश्यकता होती है और फ्यूजन करने के

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

लिए रेडियो एक्टिव तत्व चाहिए होते हैं। अणु के 92 तत्वों में केवल 5–6 तत्व रेडियो एक्टिव तत्व हैं। उनके वलय और न्युक्लिअस में जो तत्व है इनमें खास तौर पर संतुलन स्थापित होने के बाद ही उनमें कार्य हो सकता है। इसी तरह कारणदीक्षा यानी हमारे शरीर का बाह्य यानी स्थूल रूप इस प्रकार है –'गुरुतत्व का आनंदमय कोष में धारण होना' यानी यह क्रिया न्युक्लिअस के अंदर एक प्रोटॉन के फ्यूजन के समान है। इसमें आश्चर्य की बात यह है कि जब वैज्ञानिकों ने अणु शक्ति की निर्मिती का काम किया तब अणु से निर्माण होने वाली ऊर्जा को वे नियंत्रित नहीं कर पाए तथा हाइड्रोजन या एटम बम्ब से जितनी ऊर्जा निकलती है उसका रचनात्मक विनियोग भी नहीं कर पाए। उससे या तो विनाश होता है या असंतुलन की स्थिति निर्माण हो जाती है तथा प्रयोग करते समय यदि जरा–सी भी असंगत बात हुई तो रिएक्टर खराब हो जाता है। लेकिन हमारे प.पू. बाबा की महिमा तो देखिए – उन्होंने हमारे मानवीय देह के सूक्ष्म देहरूप न्युक्लिअस में प्रोटॉन यानी 'ॐकार शक्ति या गुरुशक्ति' डालने के बाद वह ऊर्जा हमारे देहिक माध्यम द्वारा हमेशा के लिए विकरित (रेडिएट) होती रहती है मतलब यह ऊर्जा का कितना नियंत्रित विकिरण (control radiation) है!

अब मैं ॐकार साधना के बारे में कुछ कहना चाहूँगा। वं. दादाजी ने हमें बताया है कि ॐकार साधना में ध्वनि ~~लहरें~~ ध्वनि इस तरह से संप्रेषण (ट्रान्समिशन) होता है। इसका भौतिक विज्ञान में थोड़ा–सा स्पष्टीकरण दिया गया है जो इस प्रकार है – फिलहाल मैं रडार स्टेशन पर काम कर रहा हूँ। रडार में यह विशेषता होती है कि उसमें संप्रेषण और अभिग्रहण एक ही स्थान पर होते है। रेडियो में रेडियो स्टेशन से ट्रान्समिशन होता है और घरों में यानी जहाँ रेडियो या ट्रान्जिस्टर है वहाँ रिसिव्हिंग होता है परन्तु रडार में ट्रान्समिशन और रिसिव्हिंग ये दोनों एक ही जगह पर होते हैं क्योंकि रडार हवाई जहाज को तरंग भेजता है और उसी हवाई जहाज से संप्रेषित किए तरंगों का अभिग्रहण करके उन्हें देखता है। इसी तरह ॐकार साधना में भी ट्रान्समिशन और रिसिव्हिंग ये दोनों एक ही मानवीय देह द्वारा होते हैं।

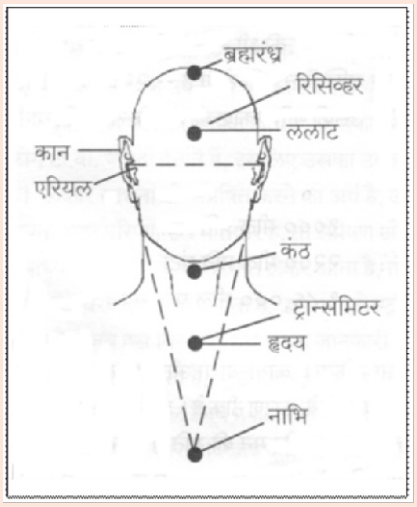

ॐकार साधना का उपयोग तथा ॐकार साधना को देह में धारण करने की क्रिया के बारे में वं. दादाजी ने हमें जो बताया है वह मैं रेखाचित्र के जरिए स्पष्ट करना चाहता हूँ। जिस तरह रडार में संप्रेषण और अभिग्रहण के लिए विद्युत चुंबकीय तरंगों (इलेक्ट्रोमॅग्नेटिक वेव्हज्) का सहारा लिया जाता है, जिनकी गति प्रकाश की गति से थोड़ी कम यानी तकरीबन 1,86,000 मील प्रति सेकण्ड होती है। उसी तरह अपने मानवीय देह में भी संप्रेषण और अभिग्रहण किस तरह होता है और उसमें एरियल सिस्टम कैसा होता है।

यह मैं अब स्पष्ट करूँगा। जैसा कि इस रेखाचित्र में दिखाया है कि जब हम ॐकार शुरु करते है तब ॐकार का संप्रेशण आरंभ होता है। इस प्रक्रिया में कान एरियल का कार्य करते है, वे संप्रेषण और अभिग्रहण दोनों में काम आते है। ॐकार का संप्रेषण आरंभ होते ही हमारी देह में नाभि, दो कान और कंठ इनसे बना त्रिकोण निर्माण होता है जिससे ॐकार रूपी ऊर्जा ध्वनि ~~लहरें~~ ध्वनि इस तरह से वातावरण में संप्रेषित होती है। इस संप्रेषित हुई ॐकार लहरों का अभिग्रहण करने के लिए ब्रह्मरंध्र की आवश्यकता होती है। ब्रह्मरंध्र और दो कान ॐकार की लहरों का अभिग्रहण करते हैं।

हमारे शरीर का बाह्य यानी स्थूल रूप इस प्रकार है –

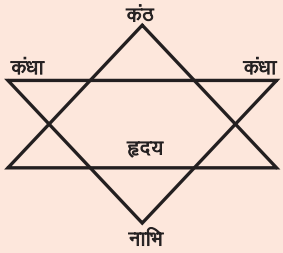

पृथ्वी की रचना और हमारी देह की रचना इनमें बेहद साम्य (एक जैसी) है, इसका पता इस रेखाचित्र से लगता है। हृदय में ॐकार तत्व स्थित होता है और यही भगवान का अंश है। पृथ्वी की स्थूल रचना भी इसी तरह है। इसीलिए हमारे बाहर के शरीर को यानी स्थूल शरीर को पृथ्वीतत्व कहते हैं।

वं. दादाजी ने बताया है कि हमारे काया, वाचा और मन ये तीनों गतिशील है। पृथ्वी की घूमने की गति से हमें अपने स्थूल देह की यानी काया की गाति का पता चलता है। हम जिस सौर मंडल में है वह सूर्य भी आकाशगंगा का एक भाग है, वह भी मंद गति से घूम रहा है और पृथ्वी खुद घूमते हुए सूर्य के चारों ओर भ्रमण कर रही है। काया को पृथ्वीतत्व माना जाए तो पृथ्वी के परिभ्रमण की गति जो 1000 मील प्रति घंटा है वही काया की गति है। वाचा यानी वायु तत्व। पृथ्वी के साथ ही वायु घूमती है। वायु की और पृथ्वी की सम्मिलित गति 1750 मील प्रति घंटा है, वही वाचा की गति है। काया, वाचा, मन इनमें सबसे चंचल तथा गतिमान है 'मन'। मन की गति प्रकाश की गति के समान है यानी 1,86,000 मील/सेकण्ड

1) काया की गति यानी पृथ्वी की गति – 1000 मील प्रति घंटा
2) वाचा यानी वायु की गति – 1750 मील प्रति घंटा (पृथ्वी की गति के साथ)
3) मन यानी तेज या प्रकाश की गति – 1,86,000 मील प्रति सेकण्ड

इस चार्ट से आपको काया, वाचा और मन इनकी गति में जो फर्क है उसका अंदाजा होगा। काया, वाचा और मन इनकी अलग–अलग गति के अनुसार देह में जो कुछ चल रहा है वह देह की सीमाओं में बंधा होने के कारण ही ठीक है। हमें काया, वाचा, मन प्राप्त होने के साथ ही उन सबकी ये अलग–अलग गतियाँ भी प्राप्त हुई है। प. पू. बाबा ने गुरुभक्तों के काया, वाचा और मन इन तीनों की गतियों का संबंध ॐकार साधना के साथ स्थापित करके एवं उन्हें एकरूप करके प्राप्त गति को नियंत्रण में लाया है। प.पू. बाबा की शक्ति से और कृपाशीर्वाद से ही यह संभव हो सका अन्यथा हमारे लिए यह सब करना असंभव था। जिस सद्गति की हमें चाह है वह हमारे लिए अप्राप्य रह जाती। पृथ्वी के भ्रमण के कारण हमारी देह को भी पृथ्वी की गति है इसलिए हमारे आचार–विचार एकरूप नहीं हो पाते। हमारे मन की गति बहुत ही ज्यादा होने के कारण वह हमारे नियंत्रण में नहीं है। मन को नियंत्रित करने के लिए बहुत ही जबरदस्त ताकत की आवश्यकता है। हमें श्री गुरु के द्वारा प्राप्त हुआ ॐकार तत्व इतना प्रखर है कि वह हमारे काया, वाचा और मन इनकी अलग–अलग गतियों को एकरूप करके एक नई, ब्रह्मांड की गति यानी ब्रह्मगति का निर्माण करता है जो कभी नष्ट नहीं हो सकती। यह ब्रह्मगति यानी ब्रह्मांड को व्याप्त करने वाली गति पृथ्वी और काया, वाचा, मन की गतियों से भिन्न है और उसका अनुभव तभी हो सकता है जब हम काया, वाचा और मन की तीन अलग–अलग गतियों को नियंत्रित करके उनका समन्वय स्थापित कर सकें। किसी भी गति को नष्ट नहीं किया जा सकता। ऊर्जा के कारण गति निर्माण होती है मतलब गति में कोई ना कोई शक्ति अवश्य कार्य करती है, यानी गति में ऊर्जा होती है और ईश्वर द्वारा निर्मित ऊर्जा को कोई नहीं मिटा सकता। लॉ ऑफ कॉन्झर्वेशन ऑफ एनर्जी (ऊर्जा के संरक्षण का नियम) के अनुसार किसी भी ऊर्जा को अन्य प्रकार की ऊर्जा में बदला जा सकता है लेकिन मिटाया नहीं जा सकता। काया, वाचा और मन इनकी गतियों को नियंत्रित करने के लिए इन सबकी गतियों से बेहतर गति का होना आवश्यक है और ऐसी उस गति का निर्माण करती है हमारी 'ॐकार साधना'।

काया, वाचा और मन इन तीनों की गति को एकरूप करके उसमें गुरुतत्व समाविष्ट करना, 'कारणदीक्षा' देकर यह परिवर्तन करना और ॐकार साधना से प्राप्त हुई ऊर्जा का गुरुभक्तों के माध्यम द्वारा निरंतर विकिरण करना इन सबका विवेचन यथाशक्ति आपके सामने रखा है।

आपकी देह द्वारा ॐकार की लहरों का संप्रेशण और अभिग्रहण होने के बाद अब आप माध्यम के रूप में तैयार हो गए हैं। जिस तरह रडार ठीक तरह से लगाने के बाद जहाज को देख सकता है उसी तरह जब कोई दुखी व्यक्ति अपनी परेशानियाँ या मुसीबते लेकर आता है तो उसके दुख का कारण सेवक के दिमाग में अंकित होता है। जहाज को रडार सिस्टम से कैसे देखा जा सकता है वह इसी सिद्धांत पर आधारित है। मैं इसी उपकरण पर काम कर रहा हूँ। रडार में कॅथोड–रे टयूब होती है, उस पर विशेष तरह के पदार्थ से कोटिंग करते है। इस पर चित्र अंकित होता है। कॅथोड–रे टयूब का उपयोग कई उपकरणों में होता है जैसे की टी.वी.। यहाँ पर रडार की मिसाल एकदम सटीक है।

जब रडार पूर्णतः तैयार होता है तब उसमें संप्रेषण और अभिग्रहण सुचारु ढंग से होने लगता है। इस सारे सिस्टम को इलेक्ट्रॉनिक गन कहते है। एक बिंदु स्थान पर रडार द्वारा जानकारी भेजी जाती है। वह जानकारी ग्रिड पर आती है तब सारा इलेक्ट्रॉनिक वितरण सतर्क हो जाता है। कुछ इलेक्ट्रॉन्स् कॅथोड–रे टयूब पर जाकर समाघात करते है और कॅथोड–रे टयूब का हिस्सा उद्दीपित हो जाता है। इस तरह कॅथोड–रे टयूब प्रकाशमान होकर जहाज़ नजर आता है। इसी तरह सेवकों को दुखी व्यक्ति की परेशानियों का कारण दिखाई देता है। मानवीय देह में सूक्ष्म–अतिसूक्ष्म प्रक्रियाओं के लिए बहुत कुछ प्रबंध किया गया है परन्तु उसका इस्तेमाल करना हम नहीं जानते ।

व्यक्ति की समस्याओं का कारण कहाँ पर होता है?वह कारण उस व्यक्ति की स्थूल देह में नहीं होता वह सूक्ष्म देह में होता है। रड़ार भी अपना कार्य सूक्ष्म ढंग से ही करता है, रडार की किरणों के बारे में कुछ भी पता नहीं चलता। यह कोई नहीं जानता कि रडार की किरणें कहाँ से आई और कहाँ पर गई, कितनी गति से गई, किस तरह जहाज से टकराई और किस तरह से वापस आकर उसका अभिग्रहण होकर जानकारी अंकित हो गई? केवल वैज्ञानिक ही इस ज्ञान को समझ सकते है। अन्य लोग रडार की लहरों को तथा उसके कार्य को अपनी आँखों से नहीं देख सकते। रडार के इस कार्य के लिए बहुत बड़ी साज–सज्जा आवश्यक है जिसके लिए बहुत धन चाहिए परन्तु वैसा ही कार्य प.पू. बाबा ने वं. दादाजी द्वारा बिना किसी उपकरण या साधन के किया है।

ॐकार साधना द्वारा तैयार (सिद्ध) सेवक के कानों के जरिए दुखी मनुष्य के जीवन का वह तत्व जो कठिनाईयों का कारण बना है सेवक के दिमाग में अभिग्रहीत होता है, अंकित (धारण) होता है। कॅथोड–रे टयूब के समान ही सेवक के दिमाग के नीचे के भाग में विकसित हुए परदे पर इलेक्ट्रॉनिक गन के आघात जैसी प्रक्रिया होकर सेवक को उसके सामने बैठे हुए व्यक्ति की समस्या की सारी स्थिति स्पश्ट नजर आती है। फिर डॉक्टर गुरुबंधु ने बताए अनुसार सेवक के ब्रह्मरंध्र में उसका विश्लेषण होकर सेवक द्वारा दुखी मनुष्य की समस्या के लिए निराकरण प्राप्त होता है। दुखी मनुष्य की समस्या का कारण अंकित करने की मूल प्रक्रिया ठीक उसी तरह होती है जैसे इलेक्ट्रॉन्स् के समाघात से इलेक्ट्रॉनिक वितरक का भाग प्रदीप्त होते समय रडार में होती है। इस तरह ॐकार तत्व के प्रभाव से सिक्स्थ सेन्स द्वारा सेवक दुखी व्यक्ति की समस्या का कारण तथा निराकरण देख सकते हैं।

शेष आगे अंक में – Continue ....

।। शुभं भवतु।।

जनम जनम का सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible